✳ षष्ट अध्याय ✳

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के देश-काल-वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

: षष्ठ अध्याय :

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के देश-काल-वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन ।

6.1 देश-काल-वातावरण के तत्त्व :-

6.1.1 भौगोलिक परिवेश :-

प्रदेश को अंचल बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण हाथ भौगोलिक परिवेश का होता है क्योंकि वही उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करता है तथा सामान्य सामाजिक जीवन से भिन्न करता है।

6.1.2 सामाजिक वातावरण :-

आँचलिक उपन्यास जिन अंचलों से संबंधित होते हैं उनकी अपनी सामाजिक समस्याएँ होती हैं, अपने नैतिक मानदंड होते हैं और अपनी संस्कृति। इन्हीं का समग्र चित्रण सामाजिक वातावरण में किया जाता है।

6.1.3 प्राकृतिक वातावरण :-

प्राकृतिक वातावरण आँचलिक उपन्यासों की सबसे बडी विशेषता है। आँचलिक उपन्यासकार बडी कुशलता से विभिन्न प्रकृति रूपों द्वारा विशिष्ट वातावरण की निर्मिती करता है जो कथा को प्रभावी परिवेश प्रदान करता है।

6.2 'मैला आँचल' उपन्यास का देश-काल-वातावरण :-

आँचलिक उपन्यासों के अधिकतर लेखक उन जनपदों का ही जीवन प्रकाशित कर रहे हैं, जिनको उन्होंने अपने भीतर से जिया है।

आँचलिक उपन्यास, टूटते हुए भारतीय जीवन की आंतरिक लय को पकडते हैं क्योंकि नगर जीवन से संबंद्ध प्राचीन उपन्यासों में जिंदगी की धडकन महसूस नहीं होती। डॉ. इंद्रनाथ मदान की मान्यता है कि

''जब ग्राम नगरों से संबंध होने लगते हैं तो उनकी जडता टूटने लगती है। रेणु के अंतिम उपन्यास इसके सुंदर उदाहरण हैं।''[1]

'मैला आँचल' उपन्यास का कथाक्षेत्र बिहार राज्य के पूर्णियाँ जिले का मेरीगंज गाँव है। उपन्यासकार ने इस क्षेत्र के भौगोलिक परिवेश को प्रारंभ में ही इसतरह से चित्रित किया है-

''बूढी कोशी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेडों से भरा हुआ जंगल है। ---ताडबन्ना के बाद ही एक बडा मैदान है, जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है, लाखों एकड जमीन ! वंध्या धरती का विशाल अंचल ! इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच-बीच में बालचूर और कहीं कहीं बेर की झाडियाँ। कोस भर मैदान पार करने के बाद, पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पडता है, वही है मेरीगंज कोठी।''[2]

इसके साथ गाँव के पूरब में बहनेवाली धारा कमला नदी का भी उपन्यासकार ने चित्रण किया है।

उपन्यास का कालखंड आधुनिक है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम काल का दर्शन होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से प्रेरित भारतीय जनता का दर्शन होता है। गांधीजी के नेतृत्त्व में 1942 में हुए देशव्यापी आंदोलन का उपन्यास में उल्लेख है। उपन्यास के बहुतसे पात्र गांधीजी से प्रभावित तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय दिखायी देते हैं।

'मैला आँचल' का रूप उसकी सामाजिक सरंचना, राजनैतिक चैतन्य, धार्मिक विश्वास आदि के द्वारा व्यक्त हुआ है। 'मैला आँचल' में मेरीगंज गाँव के 1946 से अगस्त 1948 तक का काल दिया गया है। सारे देश में अस्थिरता का वातावरण था।मेरीगंज की राजनीतिक जागृति पर गांधीजी का प्रभाव था। बालदेव, कालीचरन, बावनदास गाँव के राजनीति का उद्‌घाटन करते हैं। यहाँ जातीयता बडी मात्रा में है। कायस्थ, राजपूत और यादव ये तीन वर्ग एक दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयास में रहते हैं। पूर्णिया जिले का यह पूर्वी अंचल मलेरिया और काला आजार से ग्रस्त है। इन्हीं रोगों से इस भाग को मुक्त करने के उद्देश्य से डॉ. प्रशांत यहाँ आया है। यहाँ पहुँचने पर डॉ. प्रशांत मलेरिया और काला आजार के अतिरिक्त गरीबी और जहालत इन सामाजिक खतरनाक रोगों को देखता है। रोगों से ग्रस्त इस प्रांत के लोग इतने अंधविश्वासी हैं कि गाँव में अस्पताल खुलना भयंकर विपत्ति का सूचक मानकर डॉ. प्रशांत के कार्य का विरोध करते हैं। डॉ. के कार्य और उसकी दवा के बारे में

अफवायें फैलायी जाती हैं। पूंजीवाद गाँव को खोखला बना रहा है। थोडे से पैसेवाले लोगों को छोड बाकी सब मजदूर और कृषक है। महंगाई बढ रही है और पूंजीपतियों द्वारा किसान लुटा जा रहा है। अंगूठे की टीप देकर वार-त्योहार मालिक लोगों से नाज लेकर फिर जिंदगी भर चुकाते रहते हैं। जमीनदार जमीन हडपने की फिक्र में नये नये जमीन के बंदोबस्त द्वारा गरीबों को लूटते हैं। यहाँ ऐसे भी इन्सान है जिन्हें आम की गुठलियों के गूदे पर जिंदा रहना पडता है।

''आखिर वह कौनसा कठोर विधान है जिसने हजारों क्षुधितों को अनुशासन में बांध रखा है ? कफ से जखडे हुए दोनों फेंफडे, ओढने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं -----भीगी हुई धरती पर लेटा न्यूमोनिया का रोगी मरता नहीं, जी जाता है।''[3]

यहाँ सात माह के बच्चे बथुएं के साग पर पलते हैं। यहाँ देह को तेल लगाना विलासिता है। यहाँ का गरीब और भी गरीब हो रहा है और अमीरों का अन्याय बढता जा रहा है। लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट नहीं है। उनके दिल में आशा और विश्वास का नामोनिशान तक नहीं है।

गाँव के धार्मिक और नैतिक जीवन की अपनी विशेषताएँ हैं। मठ के महंत गद्दी के लिए झगडा करते हैं। समाज में नैतिकता दिखायी नहीं देती। नोखे की स्त्री रामलगनसिंह के बेटे से फंसी हुई है। बालदेव कोठरिन की ओर आकर्षित हो गया है। हरगौरीसिंह अपनी मौसेरी बहन में फंसा हुआ है। उचितदास की बेटी कोयरी टोले के सखन महतों से फंसी है। कालीचरन ने चरखा स्कूल की मास्टरनी को अपने घर में रख लिया है। शिवशंकर सिंह बेइज्जत हो चुके हैं और डॉक्टर कमला के प्यार में उलझा हुआ है। महंत दासियाँ रखते हैं, उनसे मनमानी सेवा करवाते हैं, गांजा पीते हैं और जनता के पैसों पर ऐश करते हैं। इस तरह से सर्वत्र अनैतिकता का वातावरण है।

गाँव के लोगों के आचार विचार, रीतिरिवाज, त्योहार आदि की निजी विशेषताएँ हैं। मेरीगंज में त्योहारों का अपना महत्त्व है। होली, सतुआनी, सिखा आदि पर्व यहाँ मनायें जाते हैं। संक्राति के दिन सतुआनी पर्व होता है। इस दिन सत्तू खाने का रिवाज है। साल के प्रारंभ में पहली वैशाख को 'सिखा' पर्व होता है। इस दिन गाँव के किसी भी घर में चूल्हा नहीं जलता क्योंकि सालभर जलते रहने के लिए साल के पहले दिन अग्नी देवता को विश्रांति दी जाती है। इस दिन गाँव के जमींदार लोग नया खाता खोलते हैं।

होली का दिन गाँव के लोगों को बडा महत्त्वपूर्ण है। इस दिन रंग के लिए पैसे क्यों न हो पर होली जरूर खेलते हैं चाहे वह पानी से हो या किचड से। होली के पर्व पर डॉक्टर और कमली के होली खेलने के प्रसंग में एक लोकविश्वास का उल्लेख किया गया है, ''कहते हैं सिंदुर लगाते समय जिस लडकी के नाक पर सिंदूर झडकर गिरता है, वह अपने पति की बडी दुलारी होती है।''[4]

इसी के साथ डाइन, जिन आदि से संबंधित अनेक विश्वासों को विभिन्न प्रसंगों में पिरोया गया है। यहाँ के लोगों में मनौतियां माँगने की प्रथा है। किसी समस्या के निवारण के लिए लोग कालीमद्दीपूर घाट पर चेथरिया पीर में चीथडा लटका देते हैं। इस चेथरिया पीर पर उनकी नितांत श्रद्धा है। इस तरह से धर्म, रिवाज, त्योहार आदि को लेकर इनकी खास मान्यताएँ हैं। इन बातों से गाँव में एक धार्मिक वातावरण निर्माण हुआ है।

गाँव के वातावरण में गीतों और परिकथाओं ने भी रंग भर दिया है। मेरीगंज के लोग अपने नित्य जीवन में मनोरंजन के लिए लोकगीत, लोकनृत्य का सहजता से अचरण करते हैं। इसके लिए झांझ करताल, मृदंग आदि वाद्यों का प्रयोग करते हैं। चैती, बटगमनी, फगुवा आदि गीतों का चित्रण हुआ है। मैथिली लोकगीत जैसे,

''माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के

जौ बुढवा होइत जमाय गे माई!''[5]

भऊजिया गीत जैसे,

''चढली जवानी मोरा अंग अंग फडके से

कब होइ हैं गवना हमार रे भउजिया ऽऽऽ।''[6]

आदि लोकगीतों ने आँचलिक जीवन का साक्षात चित्र उपस्थित किया है। गीतों के अतिरिक्त बिदापत नाच, सावित्रि नाच इनका अपना महत्त्व है। लोकनृत्य की साल में एक बार यहाँ पर होड लगती है।बिदापत नाच के खास बोल होते हैं,

''तिरकट धिन्ना, तिरकट धिन्ना

धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना

धिनक धिनक धा, ध्रिक ध्रिक तिन्ना ।''[7]

जाट् जट्टिन का खेल भी एक जगह चित्रित किया है। इस खेल को देखने का अधिकार केवल स्त्रियों को है। पुरूषों में से केवल वे ही पुरुष इस खेल को देख सकते हैं, जिनकी मूछें अभी उगी नहीं है। यदि कोई मूंछवाला इस खेल इस खेल को देख ले तो उसकी बात पंचायत में पहुँच जाती है।

परिकथाओं में लोरिक या विज्जेभान की कथा और सुरंगा सदाब्रिज की कथा आदि का चित्रण हुआ है। सुरंगा सदाब्रिज की कथा तो खलासीजी नामक पात्र की कथा में प्रभावीरूप से रंग भरती है।

मेरीगंज के निकट जंगल में संथाल जाति के लोगों की बस्ती है। इनके रीतिरिवाज गाँव के लोगों से भिन्न हैं। इनके शराब के प्रकार तक गाँववालों से अलग हैं। मेरीगंज के लोग ताडबन्ना में लबनी का आनंद उठाते हैं। संथाल लोग पंचाय नामक शराब पीते हैं।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त छोटी जाति के लोगोंद्वारा बडी जाति के लोगों को परनामपाती किया जाना, धैलासुपारी की सजा आदि छोटी छोटी बातों का भी उपन्यास में चित्रण किया है। इसके साथ पंद्रह अगस्त के दिन उपन्यास के प्रमुख पात्र प्रशांत की प्रेमिका कमली इस अंचल में पहने जानेवाले सभी तरह के गहनों से लदकर प्रशांत को मिलने जाती है। उसके शरीर पर बांक, हँसुली, बाजू, कंगना चूर, झंझनी आदि गहने हैं। उसके कंगना चूर थोडी-सी शरीर की सिहरन पर टुन-टुन करके खनक उठते हैं। गाँव में स्थित मठ, मठ के नियम, मठ में महंती की दीक्षा देने का प्रसंग आदि का सविस्तर वर्णन उपन्यास में मिलता है।

प्रकृति चित्रण को आँचलिक उपन्यास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। 'मैला आँचल' लेखक का उद्देश्य मेरीगंज के समाज का चित्रण करना है। इस उद्देश्य के कारण अत्यंत प्रभावी ढंग का प्रकृति चित्रण हमें उपन्यास में प्राप्त नहीं होता फिर भी उपन्यास का कथांचल मेरीगंज और उनके आसपास के इलाके की भौगोलिकता चित्रित हुई है। इस प्रदेश की कमला नदी, नदी में खिले कमल के फूल, आमलतास, शिरीष, पलास और साथ साथ गुलमोहर के फूलों से भरी धरती का बहुत बार वर्णन आया है। नदी के पास फसलों से हरीभरी खेती गेंहू, रब्बी, धान की फसले यहाँ चित्रित है। फूलों के साथ फलों का भी उल्लेख किया है जैसे ताड, जामुन,

गूलर, आम, कटहल, तूत, बडहल, कागजी नींबू आदि फलों से लदें पेड। इस प्रकार फसलें, फूल, फल आदि से युक्त धरती वर्णन ने प्रकृति चित्रण में सहयोग दिया है।

उपन्यास के घटनाक्रम और वर्ष की ऋतुओं का संयोग लेखकने बडे विशेष रुप से किया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र डॉ. प्रशांत देशवासियों की सेवा करने का व्रत लेकर 1947 के प्रारंभ में माघ के महिने में मेरीगंज पहुँचता है। माघ की ठंडी हवा का वर्णन इस प्रकार किया है, ''सुई की तरह गडनेवाली, माघ के भोर की ठंडी हवा का कोई देह पर असर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्य हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छुई जाती है, तब घूर में फिर से सूखे पुआल डाल कर नई आग पैदा की जाती है।''[8]

माघ के बाद फागुन की बावरी हवा में होली के गीत मंडराने लगते हैं। फगुवा के गीतों से जवानों के ही नहीं बूढों के शरीर भी सिहर-सिहर उठते हैं। जोगीडा और भंडौआ के गीतों के कारण फागुन की आवारा हवा मदहोश हो उठती है। इसी समय से डॉक्टर की जिंदगी में कमला का नया अध्याय शुरू होता है।

फागुन के बाद चैत संक्राति और वैशाख का सिखा पर्व आता है। उसके बाद जेठ की तपन आती है और उसके बाद आषाढ के बादल मादल बजाना शुरू कर देते हैं। डॉक्टर इस काल में गुलमोहर के फूलों से मोहित हो जाता है। उसे मिट्टी का मोह महसूस होने लगता है।

बरसात के खंडित होने पर गाँव की स्त्रियां 'जाटजट्टिन' का खेल खेलती हैं।

बरसात के बाद शरद और हेमंत का आगमन होता है। लोग जाडे से कांप रहे थे और इन्हीं दिनों दिल को कंपानेवाला गांधीवध का समाचार मिलता है। इस तरह माघ से प्रारंभ किया हुआ उपन्यास फिर माघ तक पहुँच जाता है।

इस तरह से उपन्यास के घटनाक्रम और वर्ष के माघ, फागुन, वैशाख, शरद, हेमंत आदि ऋतूओं का वैशिष्ठपूर्ण वर्णन कर दोनों में सुंदर रीति से संयोग किया है। इस कारण उपन्यास में प्राकृतिक वातावरण निर्माण हुआ है।

प्रकृति चित्रण केवल भौतिक चित्रणद्वारा ही नहीं तो उस पर मानवीय संवेदनाओं के आरोप द्वारा भी किया जाता है। उपन्यासकार की भावुकता ऐसे आरोपण में अपनी अभिव्यक्ति पा लेती है।

उपन्यास में वर्षाऋतू के वर्णन में लिखा है,

" ----छररर ---छररर! बादल मानो धरती पर उतरकर दौड रहे हैं। छहर----छहर ! "[9]

यहाँ बादलों पर मानवीय संवेदना का आरोप हुआ है, जिससे प्रकृति रूप सरस हो उठा है।

इस तरह से लेखक ने उपन्यास में अनेक जगह प्रकृति चित्रण किया है परंतु उसे प्रभावी प्रकृति चित्रण नहीं कहा जा सकता।

आँचलिक उपन्यासों में आँचल को ही नायक बनाया जाता है। इसके कारण समाज जीवन का व्यापक चित्रण होता है। इस कारण इन उपन्यासों का घटना काल कम होता है। इस उपन्यास का काल सवा वर्ष है।

इस प्रकार देश-काल-वातावरण के भौगोलिक परिवेश, सामाजिक वातावरण और प्राकृतिक वातावरण इन तत्त्वों के साथ 'मैला आँचल' उपन्यास के देश-काल-वातावरण का विवेचन करने के उपरांत इसमें पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह दिखायी देता है।

6.3 'पंडघवली' उपन्यास का देश-काल-वातावरण :-

'पडघवली' उपन्यास का कथाक्षेत्र महाराष्ट्र राज्य के उत्तर कोंकण का पडघवली गांव है।

उपन्यास में लेखक ने इस प्रदेश के भौगोलिक परिवेश का अनेक जगहों पर चित्रण किया है।

उपन्यास में प्रदीर्घ कालखंड का चित्रण हुआ है। पडघवली की स्थापना से लेकर उसके उध्वस्त होने तक का चित्रण किया है। इस प्रदीर्घ काल को तीन हिस्सों में विभाजित किया है। उपन्यास के पूर्वाध में पडघवली की स्थापना और उसकी संप्पन्नता का चित्रण किया है। दूसरे भाग में उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र अंबू के कथनद्वारा गांव के सामाजिक, धार्मिक वातावरण को चित्रित किया है। इसके बाद तीसरे तथा अंतिम भाग में पडघवली की उध्वस्त स्थिति चित्रित की है। इस अंतिम भाग के चित्रणद्वारा लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत के देहातों की अवस्था दिन-ब-दिन कितनी बदतर हो रही है यह दिखाने का प्रयास किया है। इस चित्रणद्वारा उन्होंने कोंकण में स्थित पडघवली की आर्थिक समस्या, इस समस्या को सुलझाने के लिए धीरे धीरे मुंबई की ओर

भाग रहे लोग और उनके पीछे रिक्त हो रहा गांव, नष्ट हो रही संप्पन्नता,गाँव की उध्वस्तता आदि को चित्रित किया है।

'पडघवली' का रूप उसकी सामाजिक सरंचना, धार्मिक विश्वास आदि के द्वारा व्यक्त हुआ है।

उपन्यास में गांव की स्थापना से लेकर वह उध्वस्त होने तक का चित्रण किया है। गांव की स्थापना केशवभट ने की। उसके बाद राघोभाट की मेहनत और कर्तृत्त्व से गांव का विस्तार हुआ। गांव संप्पन्न हुआ। इस काल में लोगों में एकता, प्यार, सहकार्य की भावना, कष्ट करने की तैयारी थी। संपूर्ण गांव ही घर जैसा हसता खेलता संगठित था। परंतु धीरे धीरे असंतुष्ट व्यक्तियों ने अपनी करतूतों से गांव में असंतोष फैला दिया। अब व्यंकूभट जैसा दुष्ट व्यक्ति गांव के लोगों को फसांकर उनसे जमीन, जायदाद, पैसे लूट रहा है। वह केवल अपने स्वार्थ की बात सोचता है। उसके दिन-ब-दिन बढते कारस्थानों से गांव खोंखला हो रहा है।

यहाँ जातीयता भी महत्त्व रखती है। ब्राह्मण जाति उच्च मानी जाती है। गांव की कुलवाडी और अन्य जातियां निम्न मानी जाती हैं। कुलवाडी लोगों के हाथ का खाना ब्राह्मण लोग निषिद्ध मानते हैं। ब्राह्मणों के घर में मुस्लिमों को अलग से रखे बरतनों में पानी पीने के लिए दिया जाता है।

गांव के दो तीन घरों को छोड बाकी सब मध्य और निम्न वर्गीय लोग हैं। पहले गांव के हर एक घर का व्यक्ति दिनभर कष्ट कर अपनी रोजी रोटी आराम से कमा सकता था। परंतु अब गांव की स्थिति पहले जैसी नहीं रही। लोगों के लिए रोजी-रोटी कमाना मुश्किल हो गया है। गांव की आर्थिक स्थिति बिगड जाने के कारण लोगों के लिए जीवन यापन एक समस्या बन गयी है। इसी कारण धीरे धीरे यहाँ के लोग मुंबई भाग रहे हैं। गांव में अब संपन्नता नहीं रही और न ही सुख-शांति। मुंबई की ओर भाग रहे लोगों के पीछे इनके घर, जमीन, बाग सब उध्वस्त हो रहे हैं। गांव में वृद्ध लोगों को छोड कोई युवा व्यक्ति दिखाई नहीं देता। गांव एकदम सूना सूना दिखाई देता है।

गांव के धार्मिक और नैतिक जीवन की अपनी विशेषताएँ हैं।

यहाँ की अनेक धार्मिक मान्यताएँ परंपरा से चलती आयी है। गांव के बाहर कलमी आम के पेड पर गांव का रक्षणकर्ता गिऱ्होबा निवास करता है तथा यह गिऱ्होबा गांववासियों के संकट में उन्हें मदत करता है और उनके मार्गदर्शन के लिए उन्हें साक्षात्कार देता है ऐसी गांववालों की मान्यता है। गिऱ्होबा के साक्षात्कार पर

इनका इतना विश्वास है कि साक्षात्कार में गिऱ्होबा ने दी हुई आज्ञा का पालन करना ये लोग अपना प्रथम कर्तव्य मानते हैं। हर शुभकार्य में गिऱ्होबा को प्रसाद चढाना इनके लिए महत्त्वपूर्ण है। हिंदूओं के साथ गांव के मुस्लिम लोग भी इस गिऱ्होबा पर श्रद्धा रखते हैं। उनके लिए यह गिऱ्होबा पीरबाबा नाम से जाना जाता है।

गिऱ्होबा के साथ गांव में अंबू के घराने का नौकर गेंगाण्या की मृत्यु के बाद उसकी पत्नियाँ भी सती गयी। उस जगह उनके नाम से 'सतीचे ओटे' नामक जगह बंधवायी गयी है, उसपर हररोज दिया जलाने की प्रथा है। इन सतियों पर गांववालों की श्रद्धा है तथा ये भी साक्षात्कार देती हैं ऐसा विश्वास है। यह भी कहा जाता है कि हर अमावस और पूर्णिमा को उस जगह कुमकुम और हल्दी आ जाती है। किसी को कोई समस्या हो तो उसके निवारण के लिए यहां के लोग शिव की आराधना कर 'सोळा सोमवार' का व्रत रखते हैं। इसके समाप्ति पर लोगों को भोजन कराया जाता है। यहां व्रतों का बहुत महत्त्व है। लोग बडी श्रद्धा से अपनी इच्छापूर्ति के लिए 'गुरूवार', 'संकष्टी', 'एकादशी'जैसे व्रत रखते हैं। साल में एक बार या अपनी इच्छापूर्ति पर 'सत्यनारायण' नामक पूजा रखते हैं। इन व्रतों, पूजाओं के अवसर पर लोगों को भोजन दिया जाता है। कभी कभी हैसियत न होते हुए भी केवल धार्मिकतावश इन व्रतों को रखा जाता है।

इस प्रकार यह अंचल जीवन का धार्मिक आयाम है इसे उपन्यासकार ने बाहरी रंगत के रूप में नहीं तो इस अंचल की विशिष्टता के उद्‌घाटन के रूप में चित्रित किया है।

गांव में बहुत जगह नैतिकता का पतन दिखायी देता है। व्यंकूभट की स्त्रियों पर वक्र नजर है। अपने ही एक रिश्तेदार आक्की पर वह जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। अंध भिऊआबा की पत्नी शारदा को अपनी ओर आकर्षित कर उससे संबंध बनाये रखता है। साथ में गांव की कुलवाडी स्त्रियों विशेषकर धर्मी नामक स्त्री की ओर भी वह आकर्षित है। शारदा व्यंकूभट के साथ साथ अन्य लोगों से भी संबंध रखती है। उसे उसका स्वैराचारी वर्तन गैर नहीं लगता। सख्या बावल्या नामक व्यक्ति की पत्नी अपने पति की मृत्यु के बाद एक गैर व्यक्ति से संबंध रख एक बच्चे को जन्म देती है। इस तरह से अनेक जगह अनैतिकता दिखाई देती है।

गांव के लोगों के रीतिरिवाज, त्योहार आदि की निजी विशेषताएँ हैं। कीर्तन, नाटक जैसे समारंभ भी इस भावविश्व का ही हिस्सा है।

स्त्रियों के 'मंगळागौरी', 'हळदी कुंकू', 'डोहाळ जेवणे', 'प्रायोजने' आदि समारंभो का अपना ही एक महत्त्व है। इन प्रसंगों पर गांव की स्त्रियां एकत्रित होकर हास्य, विनोद, फुगड्या, झिम्मे, दंडफुगडी,

कोंबडा, बसफुगडी, टिपऱ्या, अगीन-पासोडा' जैसे पारंपारिक खेल, अपने अपने पतियों का नाम लेना आदि का आयोजन करती हैं। इससे एक उल्हासमय वातावरण निर्माण होता है।

हर साल पडघवली में अन्य गावों से कीतर्नकर आकर कीर्तन कर जाते हैं। इन कीर्तनों को बडी श्रद्धा से सुना जाता है। त्योहारों पर गांववालों द्वारा ऐतिहासिक, पौराणिक नाटक किये जाते हैं। इन्हें देखने आसपास के गांव से भी लोग आते हैं। चैत्र महिने में भगवान मारुति के जन्मदिन पर उत्सव मनाया जाता है।

यहाँ त्योहारों का भी बडा महत्त्व है।'दिपावली','गणेशचतुर्थी'जैसे त्योहारों का विशेष महत्त्व होता है।

गाँव के वातावरण में लोकगीतों और लोककथाओं ने भी रंग भर दिया है। यहाँ के लोगों के नित्यजीवन में लोकगीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी स्त्री के गोद भरनी के प्रसंग पर अन्य स्त्रियोंद्वारा लोकगीत गायें जाते हैं जैसे,

''किजी आसुरानी छळिली धरणी

स्नानसंधेशी उरले ना पाणी

आदितीच्या उदरी आला बाई वामन आला बाई वामन।।''[10]

प्रात:काल समय स्त्रियों द्वारा भूपाली गाई जाती है, जैसे,

''उठोनिया प्रात:काली। वदनी वदा चंद्रमोळी।

बिंदुमाधवाजवळी। स्नान करा गंगेचे ।।''[11]

गांव के लोग आपस में मनोरंजन के लिए अंताक्षरी के तौर पर लोकगीत गाते हैं। इन गीतों को 'ओव्या' कहा जाता है।

''पहिली माझी ओवी। पहिला माझा नेम।

तुळशीखाली राम। पोथी वाची।।''[12]

''पडघवली गाव। गेंगाण्या नी राघोभट।

पाठीला दिली पाठ। बंधुराय।।''[13]

इस प्रकार ऐसे लोकगीतों का गांव में अक्सर अनेक प्रसंगों पर इस्तमाल होता है। इन लोकगीतों ने आँचलिक वातावरण को एक विशिष्टता प्रदान की है।

लोकगीतों के साथ लोककथाओं का भी यहाँ महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह लोककथाएँ आम, आवला जैसे पेडों से संबंधित हैं, तो कहीं 'दुर्गाबाई' जैसे देवताओं, कुलपुरुष नाग आदि से संबंधित हैं। इसके साथ गाव के स्थापक केशवभट ने कुएँ में फेकी हुई सोने की मूर्तियाँ, 'आसरांची कडा' नामक पहाड आदि से संबंधित है। इन लोककथाओं के कारण पेड, पहाड, देवता आदि को एक विशेष महत्त्व तथा स्वतंत्र व्यक्तित्त्व प्राप्त हुआ है। जिसके कारण ये गांव के सामूहिक जीवन का अंग बनकर रह गये हैं। ये पहाड, देवी, देवता, पेड लोगों के सपनों में जाकर उन्हें सूचनाएँ देते हैं जिनका लोगों द्वारा अनुसरण होता है, इससे इन लोगों के स्वभाव का दर्शन हो जाता है। पडघवली के लोगों के लिए लोककथाओं के पेड, पहाड, देवता आदि मानव रूप ही हैं। इनके साथ इन लोगों का पुराना रिश्ता है इसी कारण ये लोग पुराने दिनों को वर्तमान में समाविष्ट करा लेते हैं। इस तरह से भविष्य की अपेक्षा भूत और वैयक्तिक की अपेक्षा सामूहिक जीवन को महत्त्व देना पडघवली की विशेषता है।

उर्पयुक्त बातों के अतिरिक्त छोटी जाति के लोगोंद्वारा बडी जाति के लोगों का आदर करना। छोटी जाति के कुलवाडी लोगों का ताडी पीना। घर के आंगन को लिपने के बाद उसपर रंगोली की 'गोपद्मं' (रंगोली की खास रचना) सजाना। ऐसी छोटी छोटी बातों को भी उपन्यास में चित्रित किया है।

प्रकृति चित्रण के आँचलिक उपन्यास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। परंतु 'पडघवली' उपन्यास में स्वतंत्र रूप से प्रकृति चित्रण को स्थान नहीं मिला है। उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू और पडघवली इन दोनों के अटूट रिश्ते को ही उपन्यास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस अटूट रिश्ते के हर पहलू को चित्रित करना उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। अपनी शादी हो जाने के बाद पडघवली में आयी अंबू को पडघवली का हर रूप भा गया। पडघवली के चैतन्य से वह प्रभावित हुई। उसे यह चैतन्य पडघवली की प्रकृति के साथ साथ पडघवली के हर व्यक्ति में दिखायी पडता है। पडघवली की व्यक्ति और वहाँ की प्रकृति दोनों के साथ वह एकरूप हो जाती है। वह पडघवली की प्रकृति, व्यक्ति, संस्कृति तथा वहाँ का चैतन्य इन सबका अविभाज्य अंग बन जाती है। इसी कारण प्रा. वीणा देव कहती हैं,

''पडघवली ही प्रादेशिक कादंबरी असून ही तिच्यात लांबलचक निसर्गवर्णने नाहीत. निसर्ग माणसांशी इतका समरसून गेला आहे, कि तो वेगळा होऊच शकत नाही. तो माणसांच्या बरोबरीने वावरतो. त्याची वृद्धि, क्षय हे सगळे पडघवलीच्या जीवनक्रमाला समांतर राहून घडते.''[14]

(पडघवली आँचलिक उपन्यास होते हुए भी उसमें विस्तारित प्रकृति चित्रण चित्रित नहीं हुए हैं। प्रकृति वहाँ के व्यक्ति से इतनी एकरूप हो गयी है कि वह व्यक्ति से अलग हो ही नहीं सकती। प्रकृति इन्सान के साथ साथ चलती रहती है। उसकी वृद्धि या ऱ्हास पडघवली के जीवनक्रम से समांतर रहता है।)

इस तरह से यहाँ की प्रकृति यहाँ के व्यक्ति से इतनी एकरूप हो गयी है कि इन दोनों को अलग करना असंभव है। यहाँ के प्रकृति की संप्पन्नता तथा उसका ऱ्हास पडघवली के व्यक्ति की संप्पन्नता और ऱ्हास से समांतर रहा है। प्रकृति और व्यक्ति की इस एकरूपता के कारण ही उपन्यास में स्वतंत्ररूप से प्रकृति चित्रण को स्थान नहीं मिला है। फिर भी प्रसंगानुरूप उपन्यास में पडघवली की भौगोलिकता, वहाँ के फूल, फल, पेड आदि का चित्रण हुआ है। परंतु यह प्रभावी प्रकृति चित्रण नहीं हो सकता।

इस प्रकार देश-काल-वातावरण के भौगोलिक परिवेश, सामाजिक वातावरण और प्राकृतिक वातावरण इन तत्त्वों के साथ 'पडघवली' उपन्यास के देश-काल-वातावरण का विवेचन करनेके उपरांत इसमें पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह दिखायी देता है।

निष्कर्ष :-

आँचलिक उपन्यासों के अधिकतर लेखक इन जनपदों का ही जीवन प्रकाशित कर रहे हैं जिनको उन्होंने अपने भीतर से जिया है।

'मैला आँचल'उपन्यास का कथाक्षेत्र बिहार राज्य के पूर्णिया जिले का मेरीगंज गांव है। स्वयं फणीश्वरनाथ रेणुजी का जन्म पूर्णिया जिले में हुआ था। उनके जीवन का बहुत सा काल पूर्णिया से संबंधित रहा है इसी कारण उन्होंने अनुभूत किये हुए वातावरण को ही उपन्यास में चित्रित किया है।

'पडघवली' उपन्यास में महाराष्ट्र राज्य के कोंकण के पडघवली गांव को उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाया है। दांडेकरजी का यह स्वयं का गांव है। उनका बचपन इसी गांव में बीता है। इसीकारण उन्होंने अनुभूत किये हुए पडघवली के वातावरण को ही उपन्यास में चित्रित किया है।

'मैला आँचल' का रूप उसकी सामाजिक सरंचना, राजनैतिक चैतन्य, धार्मिक विश्वास आदि के द्वारा व्यक्त हुआ है। मेरीगंज की राजनैतिक जागृती गांधीजी से प्रभावित है। यहाँ की राजनैतिक जागृती का उद्‌घाटन बालदेव, कालीचरन और बावनदास इन पात्रों द्वारा हुआ है।

मेरीगंज में जातीयता को बडा महत्त्व है। यहाँ की हर जाति दूसरी जाति को नीचा दिखाने के प्रयास में रहती है। यहाँ का पूंजीवाद गांव को खोखला बना रहा है। पूंजीवादियों के शोषणद्वारा गाव का किसान और मजदूर दिन-ब-दिन गरीब होता जा रहा है। यहाँ ऐसे भी अनेक इन्सान हैं जिन्हें आम की गुठलियों पर जिंदा रहना पडता है।

गांव का नैतिक जीवन भ्रष्ट है। उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक अनेक जगह लोगों के जीवन में अनैतिकता दिखायी देती हैं। गांव का धार्मिक जीवन अनेक अंधविश्वासों, परंपरागत मान्यताओं, रूढियों, रिवाजों आदि से परिपूर्ण है। गांव के लोगों के आचार-विचार, रीतिरिवाज, त्योहार आदि की निजी विशेषताएँ हैं। यहाँ वातावरण में लोकगीतों और लोककथाओं ने विशेष रंग भर दिया है। मेरीगंज के लोग अपने नित्य जीवन में मनोरंजन के लिए अत्यंत सहजता से लोकगीतों और नृत्यों का आचरण करते हैं। इन खास विशेषताओं से परिपूर्ण वातावरण में आँचलिकता स्पष्टता से प्रदर्शित हुई है।

'पडघवली' का वातावरण उसकी सामाजिक सरंचना, धार्मिक विश्वास आदि के द्वारा व्यक्त हुआ है। गांव में ब्राह्मण जाति उच्च और बाकी जातियाँ निम्न मानी जाती हैं। गांव में दो तीन घरों को छोड बाकी सब मध्य और निम्न वर्गीय लोगों के घर हैं। जो दिनभर मेहनत कर अपना चरितार्थ चलाते हैं। धीरे धीरे गांव की आर्थिक स्थिति बिकट हो जाने के कारण पडघवली के लोगों के लिए जीवन यापन एक समस्या बन गयी हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिए यहाँ के लोग धीरे धीरे मुंबई की ओर भाग रहे हैं। इन लोगों के पीछे पडघवली गांव उध्वस्त हो रहा है।

गांव के उच्च वर्ग से लेकर निम्नवर्ग तक के लोगों के जीवन में अनेक जगह अनैतिकता दिखायी देती है।

गांव का धार्मिक जीवन अनेक अंधविश्वासों, परंपरागत मान्यताओं, रूढियों, रिवाजों आदि से परिपूर्ण है। गांव के लोगों के आचार विचार, रीतिरिवाज, त्योहार आदि की निजी विशेषताएँ हैं। यहाँ त्योहारों, व्रतों, समारंभों को पारंपारिक और सामूहिक रूप से मनाया जाता है। पडघवली के वातावरण में लोककथाओं और लोकगीतों ने विशेष रंग भर दिया है। यहाँ के लोग अपने नित्य व्यवहार में मनोरंजन के लिए बडी सहजता से लोकगीतों का व्यवहार करते हैं। यहाँ की लोककथाओं के कारण गांव के पेड, पहाड, देवता आदि को विशेष महत्त्व तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है जिससे ये गांव के सामूहिक जीवन के अंग बनकर रह गये हैं।

इन खास विशेषताओं से परिपूर्ण वातावरण में आँचलिकता स्पष्टता से प्रदर्शित हुई है।

प्रकृतिचित्रण को आँचलिक उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास में कथांचल मेरीगंज और उसके आसपास की भौगोलिकता चित्रित हुई है परंतु उपन्यासकार का उद्देश्य प्रकृति चित्रण की अपेक्षा मेरीगंज के समाज का चित्रण करना है। इस उद्देश्य के कारण अत्यंत प्रभावी ढंग का प्रकृति चित्रण हमें उपन्यास में प्राप्त नहीं होता।

'पडघवली' उपन्यास में उपन्यास की महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू और पडघवली इन दोनों के अटूट रिश्ते के हर पहलू को चित्रित करना उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। अपनी शादी हो जाने के बाद पडघवली में आयी अंबू पडघवली के हर व्यक्ति के साथ साथ वहाँ की प्रकृति, संस्कृति, वहाँ का चैतन्य इन सबका अविभाज्य अंग बन जाती है। वहाँ के प्रकृति की संपन्नता और ऱ्हास पडघवली के व्यक्ति की संप्पन्नता और ऱ्हास से समांतर रहा है। इस प्रकार वहाँ की प्रकृति वहाँ के व्यक्ति से इतनी एकरूप हो गयी है कि दोनों को अलग करना असंभव है। प्रकृति और व्यक्ति के इस एकरूपता के कारण ही उपन्यास में स्वतंत्र रूप से प्रकृति चित्रण को स्थान नहीं मिला है।

पडघवली गांव उसकी स्थापना के बाद कई सालों तक संप्पन्न था। गावं के लोग बहुत सुख चैन से गांव में रहते थे। पंरतु धीरे धीरे गांव की आर्थिक समस्या, सामाजिक असंतोष आदि के कारण गांव का संगठन, संप्पन्नता का ऱ्हास होकर गांव की सुख-शांति खत्म हो जाती है। लोगों के दिल में निराशा छा जाती है।

मेरीगंज गांव में पूंजीपतियोंद्वारा लोगों का शोषण, गरीबी, सामाजिक असंतोष, जानलेवा रोगों का प्रार्दुभाव आदि के कारण वहाँ का वातावरण सुख शांति से बहुत दूर है। लोगों के होठोंपर मुस्कराहट नहीं है। आशा और विश्वास का उनके दिल में नामोनिशान तक नहीं है।

इस तरह मेरीगंज और पडघवली इन दोनों गावों का वातावरण सुख-शांति, संप्पन्नता आदि से कोसों दूर है।

विशेष :-

'मैला आँचल' उपन्यास का कालखंड आधुनिक है। मेरीगंज गांव के 1946 से अगस्त 1948 तक के काल को उपन्यास में चित्रित किया है। इतने ही सीमित कालावधी में उपन्यास की घटनाएँ घटित हुई हैं। जहाँ 'पडघवली' उपन्यास में एक प्रदीर्घ कालखंड का चित्रण हुआ है। पडघवली की स्थापना से लेकर उसकी उध्वस्त हुई स्थिति तक का काल उपन्यास में चित्रित है। इस प्रदीर्घ काल को तीन हिस्सों में विभाजित करते हुए गांव की संप्पन्न विकसित स्थिति, गांव की सामाजिकता और बाद में गांव का धीरे धीरे हो रहा ऱ्हास आदि का चित्रण किया है।

'मैला आँचल' एक सामाजिक उपन्यास होते हुए भी उसे राजनीति का पुट है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से प्रेरित भारतीय जनता का दर्शन इसमें होता है। उपन्यास के बहुतसे पात्र गांधीजी से प्रभावित तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय दिखायी देते हैं।

'पडघवली' उपन्यास पूर्णत: सामाजिक उपन्यास है। इसमें राजनीति को स्थान नहीं है।

मेरीगंज गांव में जातीयता को बडा महत्त्व है। यहाँ की हर जाति दूसरी जाति को नीचा दिखाने के प्रयास में रहती है। पडघवली गांव में भी अनेक जातियां हैं परंतु वहाँ जातिवाद नहीं है। हर जाति की अपनी अपनी सीमायें हैं और उन सीमाओं का पालन उनके द्वारा बडी सहजता से होता है।

: संदर्भ-सूची :

1.	कुसुम सोफट -	फणीश्वरनाथ 'रेणु' की उपन्यास कला',	पृष्ठ. 26- 27
2.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	'मैला आँचल',	पृष्ठ. 12
3.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 174
4.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 127
5.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 56
6.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 69
7.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 76
8.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 74
9.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	वही,	पृष्ठ. 185
10.	गो. नी. दांडेकर -	'पडघवली',	पृष्ठ. 10
11.	गो. नी. दांडेकर -	वही,	पृष्ठ. 56
12.	गो. नी. दांडेकर -	वही,	पृष्ठ. 59
13.	गो. नी. दांडेकर -	वही,	पृष्ठ. 60
14.	वीणा देव -	'कादंबरीकार गो. नी. दांडेकर',	पृष्ठ. 67